फुले-शाहू आंबेडकर

विचारांची प्रासंगिकता

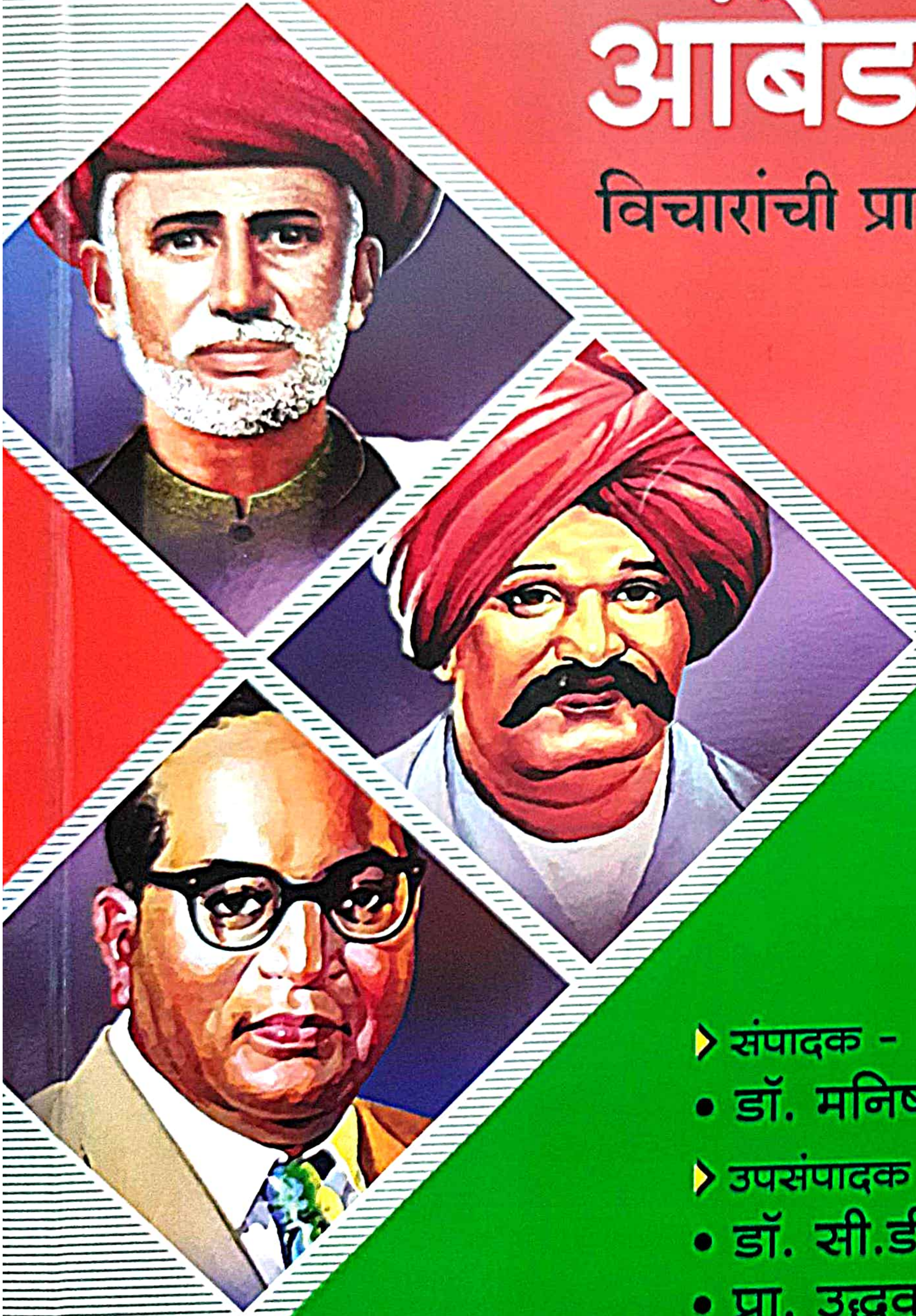

संपादक -

- डॉ. मनिष सोनवणे

उपसंपादक -

- डॉ. सी.डी. राजपूत
- प्रा. उद्धव कुडासे
- प्रा. अजय अहिर
- प्रा. अशोक वाघचौरे

फुले-शाहू-आंबेडकर विचारांची प्रासंगिकता

संपादक
डॉ. मनिष सोनवणे

उपसंपादक
डॉ. सी. डी. राजपूत
प्रा. उद्धव कुडासे
प्रा. अजय अहीर
प्रा. अशोक वाघचौरे

अथर्व पब्लिकेशन्स

अथर्व पब्लिकेशन्स

फुले-शाहू-आंबेडकर विचारांची प्रासंगिकता

© सुरक्षित

ISBN : 978-93-91712-88-4
पुस्तक प्रकाशन क्र. ९१९

प्रकाशक व मुद्रक
युवराज भटू माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स
धुळे : १७, देविदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुळे- ४२४ ००१.
संपर्क : ९४०५२०६२३०
जळगाव : शॉप नं. २, नक्षत्र अपार्टमेंट, शाहूनगर हौसिंग सोसायटी,
तेली समाज मंगल कार्यालयासमोर, जळगाव- ४२५ ००१.
संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७
ई-मेल : atharvapublications@gmail.com
वेबसाइट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : १९ फेब्रुवारी २०२२
अक्षरजुळवणी : अथर्व पब्लिकेशन्स
मूल्य : ७००

E-Book *available on*
amazon.in ▪ GooglePlayBooks ▪ atharvapublications.com

ऑनलाइन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvapublications.com

या पुस्तकातील कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्माण अथवा वापर इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी - फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या व लेखकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

---

२१ **डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : शेतीविषयक विचार व कार्य** १४४
– प्रा. राहुल ज्ञानदेव देसले

२२ **महात्मा फुले यांचे लोकशाहीविषयक विचार** १४८
– प्रा. रत्नाकर सुभाष वाघ

२३ **डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे लोकशाहीविषयक विचार** १५२
– प्रा. एन. ए. पाटील

२४ **महात्मा जोतिराव फुले : भारतीय शिक्षणक्रांतीचे जनक** १५७
– डॉ. हनुमंत कुरकुटे

२५ **राजर्षी शाहू महाराज के विचारों की प्रासंगिकता** १६४
(उद्योग, व्यापार और सहकार के विशेष संदर्भमें)
– डॉ. राजाराम गमन शेवाले

२६ **फुले–शाहू–आंबेडकर या महापुरुषांच्या विचारांची प्रासंगिकता** १७१
– डॉ. अजय प्रभाकर कुंटे

२७ **फुले–शाहू–आंबेडकर यांच्या विचारांची प्रासंगिकता**............ १७५
– डॉ. सुनीता लिंबराज गुजर

२८ **ज्योतिबा फुले जी की समाजसुधारक की प्रासंगिकता** १७९
– डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी

२९ **कामगार दिन आणि कामगारांचे आधारस्तंभ : डॉ. बी. आर. आंबेडकर**.. १८५
– डॉ. आर. के. बिन्नीवाले

३० **महात्मा जोतीराव फुले आणि महाराष्ट्रातील शैक्षणिक क्रांती** १९०
– डॉ. कैलास कारभारी खैरनार

३१ **‘मूकनायक’ वृत्तपत्रातील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार** १९४
– डॉ. यशवंत सोनुने, बाबासाहेब भा. खंडाळे

३२ **छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज यांचे विचार**........................ १९८
– डॉ. छाया भास्कर भोज

ज्योतिबा फुले जी की समाजसुधारक की प्रासंगिकता

– *प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी*
साहाय्यक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
महाराजा सयाजीराव गायकवाड महाविद्यालय,
मालेगाव कॅम्प ता. मालेगाव जि. नासिक, महाराष्ट्र

प्रस्तावना

साहित्य की श्रेष्ठ कृतियाँ काललयी होती है। वे अपने समय की यथार्थ प्रतिबिंबित करती है और सर्वकालिक भी होती हैं। अंत: वे किसी काल विशेष की सीमा में बांधकर नहीं रखी जा सकती। वे कालजयी होने के कारण मानव को निरंतर दिशा और प्रेरणा देती हैं। 'रामायण', 'महाभारत', 'रामचरित मानस' और 'भारत एक खोज' जैसे ग्रंथो में हमें दिव्यता और अलौकिकता के दर्शन होते हैं। इसिलिए ये ग्रंथ आज भी उतने ही सार्थक और प्रासंगिक हैं। साहित्य हमें मनुष्य, समाज, संस्कृती, सत्यं-शिवं-सुदंरम् की पहचान कराता है। जो रचना सर्वोत्तम है उसका स्वीकार कर जो अप्रासंगिक है, उसे छोड देना चाहिए। जो मनुष्य और मनुष्य समाज के हित में है विकास और परिष्कार के लिए है संपूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी है, वहीं मनुष्य और उसके समाज के लिए प्रासंगिक है, सार्थक है, वही अर्थपूर्ण है।

१९ वी सदी के सुधार आन्दोलनों व सुधारवादियों को स्त्री की स्थिती को लेकर काफी गहरी चिन्ता थी। स्त्री की सामाजिक स्थिती ठीक न थी। स्त्रियों की भूमिका केवल गृह कार्य तक ही सीमित थी। बच्चों का पालन-पोषण तो प्रकृति से ही स्त्रीत्व से सम्बध्द है। प्राचीन काल से वर्तमान तक स्त्रियों की यही भूमिका मान्य रही। वे चाहे खेतों में कार्य करें या सफेदपोश नौकरियों में आज भी उसकी यही कार्यकारी भूमिका गौण है। ज्योतिबा ने शिक्षा के माध्यम से स्त्रियों को जो अधिकार दिलाये वह स्मरणीय हैं। ज्योतिबा के क्रांतिकारी विचारों ने भारतीय सामाजिक इतिहास को शक्ती तथा गरिमा प्रदान की है। २१ वीं सदी की ओर जाते समय देश को उनके विचारों की यह विरासत नये काल की प्रेरणाओं का परिचय देगी। आज जिसे हम शिक्षा कहते है, वह ज्योतिबा के जन्म से पूर्व अस्तित्व में नही थी, न ही समाज के सभी वर्गों को शिक्षा का अधिकारही प्राप्त था।[१]

विद्यालय एवं स्थानीय भाषा का विकास – १९ वी शताब्दी के पुनर्जागरण एवं सामाजिक क्रान्ति व नारी उत्थान के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले ने शोषण मुक्त स्वस्थ समाज की स्थापना हेतु अपना अमूल्य योगदान दिया। दलित एवं सभी वर्गो की स्त्रियों की स्थिति में सुधार हेतु, शिक्षा के प्रचार हेतु, शिक्षा के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन करना आवश्क मानते हुए पाठशालाएं, कन्या पाठशालाएं एवं भारत की प्रथम रात्रि पाठशाला, महिला छात्रावास आदि खुलवाये। मैकाले की शिक्षा नीति (फिल्टर नीति) का विरोध किया और १८८२ में हण्टर कमिशन के समक्ष प्राइमरी शिक्षा को निःशुल्क करने हेतु प्रस्तुत प्रतिवेदन ज्योतिबा फुले जी द्वारा दिया गया, जो अविस्मरणीय प्रयास रहा। शैक्षिक क्षेत्र में ज्योतिबा फुले का योगदान व शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्यो की प्रासंगिकता हैं।[२]

शिक्षा की प्रासंगिकता – ज्योतिबा फुलेने दीन-दलितों के उध्दार के लिए अपना सारा जीवन समर्पित किया। वे जानते थे जब तक लोग जाग्रत नही होगें तब तक न शोषण का विरोध होगा न भेद-भाव मिटेगा, न ही अंधश्रद्धा मिट जाएँगी। इसलिए ज्योतिबा फुले समाज के उपेक्षित लोगों के लिए शिक्षा के द्वार खोलकर उनको ज्ञानचक्षु प्रदान करते है। आधुनिक युग के समाज के लिए यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। बहुजन समाज को जाग्रत कर अपनी आवाज बनाने का श्रेय तो फुले को ही देना पड़ता है। यदि फुले जी नहीं होते तो समाज की जो तस्वीर हम देख रहे हैं, सामाजिक परिवर्तन देख रहे हैं, वह संभव होता? यहाँ ही फुले की आवश्यकता और प्रासंगिकता स्पष्ट हो जाती है।

ज्योतिबा फुले के समय में लोक जागृति कम थी, शिक्षा का प्रारंभ भी उन्होंने किया था अर्थात शिक्षा का प्रमाण अत्यल्प था । अज्ञानता के कारण निम्न समाज भटक गया है। दारिद्रता ने उसको तोड दिया है और व्यसनाधीन बना दिया है। ज्योतिबा फुले जानते है कि इससे और अधिक उनकी दुर्गति ही होनेवाली है। इसलिए वे उन्हे सचेत करना चाहते है, भटके हुओं को सही रास्ते पर लाना चाहते हैं। उनके अनुसार

थोडे दिन तीर मद्य वर्ज करा।।तोच पैसा भरा ग्रंथासाठी ।।१।।
ग्रंथ वाचीतांना मनी शोध करा।।देऊ नका थारा ।।वैरभावा ।।२।।[३]

ज्योतिबा फुले शूद्रातिशूद्रों को समझाते हुए कहते हैं कि अरे मद्यपान करना बुरी लत है, इसे छोड़ दो इसमें जो पैसा बरबाद करते हो, इसी पैसे से अच्छा-सा कोई ग्रंथ खरीदा जा सकता है, जिससे तुम स्वयं के विचारों में और तुम्हारे बच्चों के विचारों में परिवर्तन ला सकते हो। क्योंकि ग्रंथ ही गुरू होते हैं। ग्रंथ में ही ज्ञान भंडार छुपा होता है। ग्रंथों से दोस्ती करने से मनुष्य का मन-मस्तिष्क

समृद्ध हो जाता है। व्यक्ती और समाज बदलने की शक्ति रखते हैं। इसलिए फुले शिक्षा के माध्यम से पिछड़े हुये समाज को विचार देकर जाग्रत करना चाहते हैं। इसलिए ही शिक्षा की महत्ता प्रतिपादित करते हैं।

उन्होंने शिक्षा के द्वार खोलकर लोगों को नई दृष्टि प्रदान की, जिससे वह अपना भला-बुरा पहचान सके। फुले बहुजन समाज के लिए अंग्रेजी शिक्षा की भी मांग करते हैं, क्योंकि आधुनिक युग में आगे बढ़ना है, प्रगति करनी है तो वह सब कुछ आना चाहिए जो इस स्पर्धा के युग में जरूरी है। उपरोक्त सभी बातें समाज के लिए आज भी अत्यंत उपयुक्त दिशा दर्शक हैं। अत: फुले के सामाजिक सुधार के विचार आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

नारी शिक्षा का समर्थन – ज्योतिबा फुलेने सन १८४८ में पहली कन्याशाला खोली और सन १८५१ में अछुतों के लिए पहली पाठशाला खोली। यह किसी भारतीय द्वारा प्रथम कन्या विद्यालय था। उनका कहना था यदि लड़की शिक्षित होती है, तो उसके साथ दो घर शिक्षित होते है । एक मायका और दुसरा ससुराल। उन्होंने नारी की स्वतंत्रता और उसके अधिकारों की प्रतिष्ठा का समर्थन किया। आज हर क्षेत्र में नारी अग्रणी स्थान पर है। आज वकील से लेकर जिलाधीश, अध्यापक, सचिव, सरपंच और प्रधानमंत्री तक के सभी पदों पर और विभिन्न क्षेत्रों में नारी अपनी सामर्थ्य पर कई दायित्वों को सफलता से निभा रही है। पुरुषप्रधान समाज व्यवस्था में कई शताब्दियों से अज्ञान के अंधकार से घिरी हुई नारियों को सर्वप्रथम ज्योतिबा फुले ने मुक्त किया। महिलाओं के जीवन में तो शिक्षा से इतना परिवर्तन आया है कि, हरेक क्षेत्र में उसने पुरूषों के बराबरी कारस्थान हासिल किया है। जमीन पर तो उसने अपनी मेहनत और लगन से असाध्य भी साध्य कर दिखाया किन्तु वह अब आकाश में भी उडान भरने लगी हैं। भारत की तस्वीर अब बदल रही है। परन्तु यह भी सच है कि जहाँ शहरों में गति के साथ परिवर्तन हो रहा है। वहाँ ग्रामीण परिवेश में आज भी लोग शिक्षा से बहुत दूर है। फुले अपनी दूरदृष्टि से अपने समय में जान गए थे कि अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी अवश्यक हैं, क्योंकि वह विश्वभाषा बनने वाली हैं। फुलेजी ने स्कूल खोलकर नारियों के लिए जो ज्योति प्रज्वलित की, वह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।[४]

सत्यशोधक समाज – सार्वजनिक सत्यधर्म यह ज्योतिबा का अंतिम ग्रंथ है। ज्योतिबा फुले के शरीर का दायाँ भाग पक्षाघात से बेकार होने के कारण यह ग्रंथ उन्होंने बाएँ हाथ से लिखा। फुले जी ने सत्यशोधक समाज स्थापित कर सामाजिक आंदोलन का प्रयास किया। इस आंदोलन के मूल में उनका रचनात्मक विचार था कि समाज की बहुसंख्याक जनता का सामाजिक शोषण बंद हो, सभी

मानवों को मुक्त करना। यह मानव–अधिकारों का विचार था। इस ग्रंथ की रचना प्रश्नोत्तर के रूप में की गयी है। जैसे प्रश्न है इस विश्व में मनुष्य प्राणी कैसे सुखी रह सकता है? फुलेजी का उत्तर था सत्य आचरण किये बिना मनुष्य इस विश्व में सुखी नही हो सकता। इस संबंध में फुले लिखते है –

सत्य सभी का आदि घर, सभी धर्मो का आश्रय घर।

अर्थात् सत्य सभी लोगों का घर है, इस घर में सभी मनुष्यों का स्वागत है, क्योंकि यह सभी धार्मियों के लिए आश्रय घर है जहाँ कोई भेदभाव नहीं किया जाता। सत्य के रास्ते पर चलने वाला कोई साधारण आदमी इस धर्म का अनुयायी बन सकता है। सार्वजनिक सत्यधर्म के द्वार सबके लिए खुले हैं। 'सार्वजनिक सत्यधर्म' में तैंतीस सूत्र समाविष्ट हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अन्य धर्मो के प्रति आदरभाव और सहिष्णुता सार्वजनिक सत्यधर्म की विशेषता है। जब तक सामाजिक विषमता नष्ट नहीं हो जाती, तब तक यह समझना बड़ी भारी भूल होंगी कि हमें संपूर्ण स्वतंत्रता मिल गई हैं। गाँव में आज भी ऊँची जाति वाले दलितों पर अत्याचार करते हैं। समाज के लिए फुले आज भी प्रेरणा पुरूष है, उनके सामाजिक सुधार के विचार आज भी प्रासंगिक हैं।[५]

मानवतावादी दृष्टिकोण – हर मनुष्य समाज का अनन्य साधारण हिस्सा। हैं फिर एक ऊँच और एक निम्न कैसे? फुलेजीने मानवमुक्ति की लड़ाई के लिए अपना सारा जीवन समर्पित किया । फुले जी वर्ण व्यवस्था को नकारते हैं और नई समाज व्यवस्था निर्माण करने का संकल्प करते हैं। जिस ब्राह्मणी व्यवस्थाने आम आदमी का विभिन्न षड़यंत्रों के माध्यम से शोषण किया है, उनको सुधारने का मौका दिया जाना चाहिए। ऐसी उनकी धारणा थी। इसे ही मानवता कहते हैं जो मनुष्य को मनुष्यता सीखलाता है, और भटके हुए मुसाफिर को मनुष्यता के रास्ते पर ले आता है। फुले जी के अनुसार ब्राह्मण निम्न जातियों के लोगों से घृणा करते हैं, यदि प्रत्युत्तर में हम भी उनसे ऐसाही करते हैं तो उनमें और हममें क्या फर्क रहा जाएगा ? मनुष्य को प्रेम के बलबूते पर जीता जाता हैं, घृणा के बल पर नहीं। फुले जी अपनी विशाल दृष्टि का परिचय इन पंक्तियों में देते है-

खिस्त महंमद मांग ब्राह्मणासी ।।
धरावे पोटाशीं ।। बंधूपरी ।।

हमें न केवल हिंदू धर्मीय बल्कि ख्रिस्त, मुहम्मद, मातंग, ब्राह्मणों इन सभी के साथ भी हमारा आचरण बंधु जैसा ही होना चाहिए। हिंदू धर्म के लोग ऊँच–नीच का भेद मानते हैं, एक दूसरे को घृणा से देखते हैं, वहाँ फुले को जिस ब्राह्मणी व्यवस्था का निम्न वर्णीयों को शिकार होना पडा, उन ब्राह्मणों को भी हम गले से लगाएँ और अपने भाईचारे का परिचय दें। आज भी जाति,

धर्म, वर्ण, राज्य, राष्ट्र के लिए झगडे हो रहे हैं।मानवीय मूल्यों और मानवता का क्षीण होने की आज की स्थिति में फुले जी के इन सुलझे हुए विचारों का मूल्य बहुत बडा हैं। आज के आधुनिक विज्ञान युग में फुलें के सामाजिक सुधार के विचारों की अधिक प्रासंगिकता हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोन – ज्योतिबा फुले वैज्ञानिक विचारधारा के थे। उनके अनुसार मनुष्य अपनी जाति से नही, कर्मों से श्रेष्ठ बनता है। वह दैव एवं भाग्य की कल्पना को भी अर्थहीन मानते हैं। उनका कहना है कि मनुष्य को अपनी अच्छी-बुरी करनी का फल यही मिलता है, फुले जी के वैज्ञानिक दृष्टिकोन का उदाहरण फुले जी को सावित्रीबाई से कोई संतान नही थी। उनके पिताने उनके सामने दुसरे विवाह का प्रस्ताव रखा परन्तु फुलेने यह प्रस्ताव ठुकराते हुए अपनी तर्कबुद्धि का परिचय देते हुऐ कहा कि, पहली पत्नी को अगर संतान नहीं होती तो उसमें उसका क्या दोष हैं। दोष केवल स्त्री में नही पुरूष में भी हो सकता हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ज्योतिबा फुले एक वैज्ञानिक थे, हर बात की चिकित्सा करते थे और तार्किक बुद्धि से निर्णय लेते थे। वे विचारों को कृति में उतारने वाले सच्चे महात्मा थे। पिता की मृत्यू पर उन्होने ब्राह्मणों के स्थान पर अनाथ और अपंग लोगों को भोज दिया, गरीब विद्यार्थीयों को पुस्तके बाँटी। ये बातें उनके विज्ञाननिष्ठ होने का परिचय देती है। फुले समाज को एक नई दृष्टी देना चाहते थे, किन्तु उसके साथ-साथ समाज में फैले अंधश्रद्धा के रोग को समूल नष्ट कर देना चाहते थे-

जप अनुष्ठाने स्त्रिया मुळें होती ।। दुजा का करीती । मुलासाठी?।। १।।
भट ब्राह्मणात बहु स्त्रिया वांझ। अनुष्ठानी बीज । नही का रे?।। २।। [६]

सारांश

ज्योतिबा फुले के अनुसार शिक्षा द्वारा 'ज्ञान' का प्रकाश समाज के सभी लोगों के लिए आवश्यक है उन्होंने शिक्षा के द्वार खोलकर लोगों को नई दृष्टि प्रदान की। फुले बहुजन समाज के लिए अंग्रेजी शिक्षण की माँग करते हैं, क्योंकि आधुनिक युग में प्रगति करनी है तो वह सब कुछ आना चाहिए, जो इस स्पर्धा के युग में जरूरी है। फुले जी के शिक्षा संबंधी विचार आज भी अत्यंत उपयुक्त हैं, दिशा दर्शक हैं, वर्तमान परिप्रक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक हैं। फुले निगुर्णवादी थे। वे नास्तिक नही थे। वे ईश्वर के अस्तित्व को मानते थे, परन्तु मूर्तिपूजा और पुरोहितवाद का खण्डन करते थे। अपने स्वार्थ के लिए ब्राह्मणों ने समाज में कर्मकांड फैलाए थे, जप, तप, होम, हवन, व्रत-उपवास, यज्ञ-अनुष्ठानों की भरमार थी। फुले जी की वैचारिक भूमिका विज्ञान पर आधारित थी। अतः उन्होने मूर्तिपूजा व पुरोहितवाद का खण्डन किया, यथार्थता फुले जी के विचार

समाज के लिए आज भी प्रासंगिक हैं।

आज के आधुनिक विज्ञान युग में फुले के विचारों की अधिक प्रासंगिता है। फुले जी वैज्ञानिक विचारधारा के थे। फुले ने अज्ञान के अंधकार को मिटाकर विश्व का ज्ञानभंडार सबके लिए खेल दिया। वह दैव एवं भाग्य की कल्पना को भी अर्थहीन मानते हैं। फुले समाज में फैले अंधश्रद्धा के रोग को समूल नष्ट करना चाहते थे। उनके अनुसार यदि मनुष्य दीर्घायु तक जीना चाहता है तो स्वच्छता बहुत आवश्यक है। अत: हमें नित्य स्नान कर, धुले हुए वस्त्र धारण करने चाहिए। फुले जी ने अपने वैज्ञानिक विचारों के आधार पर ही समाज परिवर्तन का अभियान चलाया, मानव मुक्ति का संकल्प किया और अपने महान सामाजिक सुधार के विचारों का परिचय दिया, जो आज के युग में अधिक प्रासंगिक हैं।

संदर्भ

१) आचार्य, डॉ. हेमलता, 'भारत में सामाजिक क्रांति के पथ-प्रदर्शक जोतिबा फुले' सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण २०१५ पृष्ठ ६१.

२) सिंह, वी.एन. जनमेजय, 'भारत में सामाजिक आन्दोलन' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, दिल्ली, बंगलुरू, गुवाहटी, कोलकाता संस्करण, २०१६ पृष्ठ २२१.

३) संपादक य. दि. फडके, महात्मा फुले वाङ्मय, पृष्ठ ५५०.

४) मुरलीधर जगताप, युगपुरूष महात्मा फुले, पृष्ठ १.

५) वहि, पृष्ठ १३०.

६) वहि, पृष्ठ ५५४.